Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

उदय प्रकाश की कहानियों का महत्व

Priyanka Jaiswal[1]* Dr. Sanju Jha[2]

[1] Ph.D. Scholar, Hindi Department, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

[2] Head of Department

सार – ***उदय प्रकाश सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकारों में से हैं. हिंदी कहानी को उन्होंने संवेदनशील भाषा दी है, यथार्थ के अंकन की एक नई शैली ईजाद की है. युवा कथाकरों पर उनका ज़बरदस्त प्रभाव है. उनके कथा तत्व का जादू अभी भी बरकरार है. इसके साथ ही वह एक श्रेष्ठ कवि और विचारक भी हैं. उनकी रचनाओं के देशी और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुए हैं.***

मेरी पसंद की इन कहानियों में आपको एक रचनाकार के तौर पर उनके अपने बनाव की बुनियादी चीजें मिलेंगी तो संबंधों की गहराई और कचोट भी इतनी ही तीव्रता से महसूस होगी. ये कहानियां अपनी बुनावट में हिंदी कहानियों में अब क्लैसिक का दरजा पा चुकी कहानियां हैं. मैंने कोशिश की है कि इन कहानियों के आधार पर समय और समाज के साथ पारिवारिक रिश्तों को देखा जाए. उनकी बहुत सी कहानियों में इन संबंधों की गहन विवेचना देखी जा सकती है, लेकिन मैंने अपनी पसंद से ये चार कहानियां ही चुनी हैं.

----------X----------

भूमिका

उदय प्रकाश की एक बेहद छोटी कहानी है **'घर'**. पहले आप इस कहानी को देखिये:

'बहुत देर से नक्शे को देख रहा था. फिर उसने वह नदी खोज निकाली जो उसके घर के पास से बहती थी. फिर उसने वह पहाड़ भी खोज निकाला जो उसके घर से मुश्किल से तीन किलोमीटर दूर था और जहां गर्मियों में वह चारा तोड़ने जाता था.यहां, इस जगह पर कहीं घर होना चाहिये. उसने नक्शे पर एक जगह पेंसिल की नोक रखी तभी उसने ध्यान दिया – नक्शा जिस देश का था, वह वर्षों पहले खत्म हो चुका था.'

हम सब ही कहीं न कहीं से विस्थापित लोग हैं या कहें कि दुनिया की अधिकांश आबादी या तो विस्थापित है या विस्थापन की राह पर है. तो हम सब इस कहानी के पात्र की तरह नक्शों में अपना मूल घर-गांव तलाश कर रहे लोग हैं. हमसे वो नदी-पहाड़-जंगल छूट गये हैं या कि छूटते जा रहे हैं, जिनके साथ हमारा पुरखों जैसा रिश्ता रहा. अब हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं बचा है, जिसे हम नक्शों में भी खोज सकें. इस कहानी की आखिरी पंक्ति बहुत मार्मिक है, लेकिन इसे जादुई यथार्थवाद या कि उड़ती हुई कल्पना न समझें, यह एक बहुत भयावह यथार्थ है, हमारे पास अपने मूल घर-गांव के जो भी नक्शे हैं, वे सचमुच बरसों पहले खत्म हो चुके देशों के हैं. हमारे पास अब देश या राष्ट्र की वो शक्ल ही नहीं रह गई है, जिसमें हम बड़े होकर जीना चाहते थे.

पहले विश्वयुद्ध के समय से ही नहीं, इससे भी बहुत पहले, कहना चाहिये कि जब से मनुष्य ने अपने लोभ और लालच के लिए धर्म या सत्ता के नाम पर इलाकों को जीतने का सिलसिला शुरु किया तभी से सामान्य आदमी विस्थापन के लिए विवश हुआ है. सोचिये कि मानव सभ्यता ने इतिहास में कितने हमले सहन किये हैं और उन हमलों में कितने करोड़ लोगों को अपना घर-संसार ही नहीं सामाजिक-पारिवारिक संस्कार भी छोड़ने पड़े होंगे. आज हम नहीं जानते कि असल में हमारा मूल क्या है. तमाम सभ्यताएं पहाड़ों के पास बहने वाली नदियों के आंचल में विकसित हुई हैं, तो **हम किस नदी का पानी पीकर फैले हुए कबीले के वंशज हैं**, हम नहीं जानते. हम नहीं जानते कि हमारे आदिम संस्कार क्या थे और कैसे वो जंगल, नदी, पहाड़ और देश खत्म हो गये. उदय प्रकाश की बहुत-सी कहानियों में इस विस्थापन के दर्द को बेहद तनाव के साथ महसूस किया जा सकता है और इस तनाव में आप मनुष्य के सबसे नजदीकी रिश्तों को देखेंगे तो मन हाहाकार कर उठता है.

'नेलकटर' कहानी का पूरा वातावरण देखें तो बारिश के दिनों का वर्णन है. ऐसा आत्मीय वर्णन जिसमें कुदरत के साथ मनुष्य के संबंध इतने सहज हैं कि आज के समय उन

www.ignited.in

दृश्यों की कल्पना ही रूमानी-सी लगती है. **'इसी महीने राखी बंधती है. कजलैंया होती है. नागपंचमी में गोबर की सात बहनें बनाई जाती हैं. धान की लाई और दूध दोने में भरकर हम सांपों की बांबियां खोजते फिरते हैं.'** ऐसी बारिश के दिनों में मां अपनी अंतिम सांसें गिन रही है. एक ऐसी मां, जिसकी आवाज बीमारी ने छीन ली है और जो गले में डॉक्टरों द्वारा लगाई गई नली से ही भोजन लेती है और उसी से सांस ले पाती है. उसी नली से उनकी यांत्रिक-सी आवाज निकलती है. **'मां को बोलने में दर्द बहुत होता होगा. इसलिए बहुत कम ही बोलती थीं. उस यंत्र जैसी आवाज में हम मां की पुरानी अपनी आवाज खोजने की कोशिश करते. कभी-कभी उस असली और मां जैसी आवाज का कोई एक अंश हमें सुनाई पड़ जाता. तब मां हमें मिलती, जो हमारी छोटी-सी स्मृति में होती थी.'**

इस मां की व्यथा को उदय प्रकाश ने बहुत मासूम बच्चे की तरह व्यक्त किया है. वह बच्चा उदय प्रकाश की तमाम कहानियों में किसी ना किसी तरह मुझे मौजूद दिखाई देता है.

उदय प्रकाश की कहानियों का महत्त्व

खुद उदय प्रकाश कहते भी हैं कि यह कहानी उन्होंने अपनी मां पर ही लिखी है. लेकिन सिर्फ इसलिये '**नेलकटर**' मुझे उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में पहले स्थान पर नहीं लगती है, बल्कि इस कहानी में उस बेहद निजी संसार को जितनी सघनता से उन्होंने व्यक्त किया है, उसकी वजह से मुझे बहुत प्रिय है. उस बच्चे के लिए मां को खो देने की कल्पना ही भयानक है. जाहिर है किसी भी बच्चे के लिए मां के न होने की कल्पना बहुत पीड़ादायक होती है. लेकिन सबको एक दिन जाना होता है और उनके जाने के बाद हम उन्हें उन चीजों से याद करते हैं, जो आखिरी समय में उनसे जुड़ी रह जाती हैं, जैसे इस कहानी में नेलकटर.

इलाहाबाद के कुंभ मेले से पिताजी का लाया हुआ नेलकटर. चीजों के साथ ऐसा आत्मीय बर्ताव कि उनकी स्मृति बहुत कारुणिक लगती है, उदय प्रकाश की कहानियों में बहुतायत से मिलेंगी. उस नेलकटर से बालक अपनी मां की मृत्यु से एक रात पहले नाखून तराशता है. **'एक घंटा लगा. मैंने उनकी एक उंगली ही नहीं, सारी उंगलियों के नाखून खूब अच्छे कर दिये. मां ने अपनी उंगलियां देखीं. यह कितना कमजोर और हार का क्षण होता है, जब नाखून जीवन का विश्वास देते हैं. कितने सुंदर और चिकने नाखून हो गये थे.'** इस पूरे अंश में पहली दो पंक्तियां देखें जो उस बच्चे की भाषा है और चौथी पंक्ति आपको लेखक की पंक्ति लगेगी. सिर्फ एक वाक्य में लेखक उपस्थित है और बाकी सब जगह वो बच्चा. वैसे इस कहानी में शायद तीन ही जगह लेखक उदय प्रकाश की मौजूदगी दिखाई देती है, बाकी जगह तो वह बच्चा ही रहता है जो हमें कहानी सुना रहा है. इसीलिये शायद यह मेरी प्रिय कहानियों में है. '**दरियाई घोड़ा**' में भी ऐसे ही कैंसग्रस्त पिता के लंबे नाखून हैं, लेकिन वह एक अलग ही त्रासद कहानी है, वह भी उदय प्रकाश ने अपने पिता पर लिखी है.

यह कहानी एक मां के साथ उस नेलकटर के ही खो देने की कहानी नहीं है, बल्कि उन पूरी स्मृतियों को भी खो देने की कहानी है, जिनमें गांव हैं, बारिश के दिन हैं, और बारिश के साथ जुड़ी तमाम जातीय परंपराएं भी, जो हमारे तेजी बढ़ते शहरीकरण में खो गई हैं. विस्थापन सिर्फ जगहों से नहीं होता, वह हमारे संस्कारों का भी होता है. और दुर्भाग्य से दूसरे विश्वयुद्ध के बाद यह विस्थापन पूरी दुनिया में बहुत तेजी से हुआ है. शीत युद्ध की समाप्ति के बाद बदली हुई वैश्विक परिस्थितियों में नव औपनिवेशिक इजारेदारी ने विस्थापन को बहुत गहरा कर दिया है. अब हम सबके मूल स्थलों पर जिस तरह कार्पोरेट निगाहें गड़ी हुई हैं, उनसे दुनिया के अधिकांश मूल बाशिंदे प्रभावित हो रहे हैं और उनके प्रतिरोध को कुचलने के लिए लगता है विश्व की तमाम सरकारें एकजुट हो गई हैं.

पिता पर उदय प्रकाश की **'दरियाई घोड़ा'** भी अपनी तरह की बेहद मार्मिक कहानी है. लेकिन पारिवारिक रिश्तों पर उदय प्रकाश की मेरी पसंद की दूसरी कहानी है **'तिरिछ'**, जो अपने शिल्प में और कहन में अनुपम है. इसका शिल्प बहुत साधारण है, लेकिन साधारण का जो आकर्षण है, वह इस कहानी में पूरी शिद्दत से व्यक्त हुआ है. यह कहानी भी एक पुत्र की ओर से कही गई है, जिसके केंद्र में पिता हैं. एक सामान्य भारतीय परिवार के पिता-पुत्र की इस कथा में तिरिछ एक मेटाफर की तरह प्रकट होता है. इस कहानी के सूत्र इसकी पहली तीन पंक्तियों में ही मिल जाते हैं. **'इस घटना का संबंध पिताजी से है. मेरे सपने से है और शहर से भी है. शहर के प्रति जो एक जन्म-जात भय होता है, उससे भी है.'** यानी पिता, स्वप्न और शहर की घटनाएं ही असल में तिरिछ की तरह जानलेवा हैं. बहुधा हम सबने देखा है कि अन्यान्य कारणों से पिता का सम्मानजनक स्थान पुत्र और परिजनों को रहस्यमयी भी लगता है और अच्छा भी, जैसा कि इस कहानी में है. एक ऐसे सम्मानित पिता जो परिवार के लिए एक सुरक्षित दुर्ग की तरह होते हैं और पूरा परिवार जिन पर गर्व करता है. लेकिन जीवन में कुछ घटनाएं या कि दुर्घटनाएं ऐसी होती हैं कि बेहद सम्मानित व्यक्ति को भी अपमान और तिरस्कार के ऐसे भयावह दौर से गुजरना पड़ता है कि उन हालात में इंसान को न जाने

www.ignited.in

कितनी बार मरना पड़ता है. ऐसी ही परिस्थितियों से इस कहानी में पिता का सामना होता है.

यूं तिरिछ एक सच है और तिरिछ को लेकर ग्रामीण समुदाय में जितने तरह के विश्वास प्रचलित हैं, वे भी इस कहानी में बहुत सघनता के साथ आये हैं. लेकिन जैसा कि मैंने कहा तिरिछ यहां एक मेटाफर है और वह लोकविश्वास से लेकर पुत्र के स्वप्नों में बहुत गहराई से व्याप्त है. सामान्य इंसान के लिए कहानी में आया तिरिछ दरअसल एक ऐसी स्थिति को बयान करता है जो किसी के साथ कभी भी घट सकती है. यानी अच्छे खासे सम्मानित व्यक्ति को अपमान और तिरस्कार का तिरिछ, जो कहीं भी पाया जा सकता है या कि अक्सर छुपा रहता है, वह कहीं से भी आकर दबोच लेता है और अगर उसका प्रतिकार न किया जाये और उसको तुरंत न मार दिया जाये तो वह आपकी जान लेने तक आपका पीछा करता रहता है. कहानी में पिता को जिस तिरिछ ने काटा, उसे पिता ने तुरंत मार दिया और घर आ गये. अब आगे की कहानी में तिरिछ के कई रूप हैं जो एक-एक कर प्रकट होते हैं. दरअसल जानवर तिरिछ ने पिता को जो काटा तो उससे उनकी मौत शायद नहीं होती, लेकिन इसके बाद जो कई किस्म के तिरिछ उन्हें गांव से शहर तक की यात्रा में काटते हैं, उन्होंने ही पिता की हत्या की. हम गांव को चाहे जितना अंधविश्वासी मानें, लेकिन वहां जो देशज ज्ञान है वह इंसान को बचाने की आदिम कोशिशों में हमेशा लगा रहता है. इसीलिये पिता गांव की झाड़फूंक से नहीं मरे, जैसा कि पुत्र कहता है, **'उस रात देर तक हमारे आंगन में भीड़ रही आयी. पिताजी की झाड़फूंक चलती रही. काटे के जख्म को चीर कर खून भी बाहर निकाला गया और कुंए में डालने वाली लाल दवा (पोटेशियम परमैंग्नेट) जख्म में भरा गया. मैं निश्चिंत था.'**

कहानी में इसके बाद असल तिरिछों का आगमन होता है, जो पिता की जान ले लेते हैं. अदालती सम्मन का तिरिछ और अदालत पहुंचने के दौरान मिले अपमान, तिरस्कार, शहरी लोगों के संदेहास्पद व्यवहार और अवैज्ञानिक किस्म की चिकित्सा के तिरिछ. धतूरे के बीजों का काढ़ा बिना किसी चिकित्सकीय परामर्श के पिला देने से पिता की चेतना चली गई. जिस असल तिरिछ के काटे जाने के करीब पंद्रह घंटों बाद भी पिता ठीक ठाक थे, उसके बाद नियति के तिरिछ ने उन्हें विषपान कराया. इसके बाद पिता की अचेतावस्था में जो कुछ उनके साथ गुजरा वह शहर और अदालत के चक्कर में एक सम्मानित ग्रामीण व्यक्ति को कदम-कदम पर काटने वाले तिरिछों का एक अंतहीन सिलसिला है. इन्हीं तिरिछों के भय से पिता शहर जाने से घबराते हैं और ये ही तिरिछ पुत्र के स्वप्नों में आते हैं.

निष्कर्ष

इन्हीं के डर से पिता बहुत कम बोलते हैं और इन्हीं के डर से रहने का एकमात्र घर खो देने का भय पिता को आत्मकेंद्रित कर देता है. कहानी के अंत में पुत्र अपने स्वप्नों का एक रहस्य खोल देता है और वही दरअसल तिरिछ का सूत्र है कि पुत्र असल में जंगल में नहीं शहर में है और ठीक उसी हालत में है, जिससे गुजरकर पिता मारे गये यानी असल तिरिछ जंगल से गायब होकर शहर में आ गया है और वह कई रूपों में फैल गया है. शहरों ने जिस तरह गांवों को लील लिया है और जंगलों को साफ कर दिया गया है, ऐसे हालात में सामान्य आदमी को दर-दर की ठोकरें खाकर अपमान और तिरस्कार के तिरिछों के काटे से मरना पड़ता है. आप चाहे जितना उनका सिर कुचल दो, असल तिरिछ से आप बच भी जायेंगे, लेकिन ये शहरी तिरिछ आपको कभी नहीं छोड़ेंगे.

संदर्भ

https://www.hindisamay.com/

www.pustak.org

www.kopykitab.com

Corresponding Author

Priyanka Jaiswal*

Ph.D. Scholar, Hindi Department, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

www.ignited.in